

एक आंदोलन , एक अभियान गौवंश (नन्दी-नंदिनी), गाय-सांड, Cow-Bull) की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए

लक्ष्य: 31 दिसंबर 2027 तक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौवंश की सुरक्षा सुनिश्चित करना

इस निवेदन, अभियान, आंदोलन, अपील के मुख्य सात संकल्प निम्नलिखित हैं

1 वयस्कों द्वारा दूध और दूध वाली चाय और कॉफी के सेवन को बंद कराना

दूध प्रकृति का वरदान शिशुओं और उनके लिए है जो दूध के अतिरिक्त कुछ भी पचा नहीं सकते। - इस से गाय- भैंस और इसके साथ साथ घाँस, चीनी, चाय पत्ती , कॉफी सीड्स , अदरक के उत्पादन पर दबाव काम होगा , जो जगह बचेगी वहां वृक्ष लगाने से पर्यावरण में सुधार होगा।

2. ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन पर रोक लगाना

आसानी से दूध निकालने के लिए प्रयुक्त ऑक्सीटोसिन गाय-भैंस को रोगी और विषैला बनाता है। इससे दूध, गोमूत्र, गोबर प्रयोग करने वाले लोग बीमार होते हैं यहाँ तक की ऐसी मरी हुयी गाय भैंस को खाने के कारण से गिद्ध भी लगभग खत्म हो गए।

3. 'नॉन-वेज मिल्क के उत्पादन को बंद कराना

गाय भैंस को चारे के रूप में मांस, हड्डियों, या खून (ब्लड मील) देने को बंद कराना। इस तरह का चारा खिलाने से गाय भैंस में शारीरिक एवं मानसिक विकृति की उत्पत्ति होती है जिससे इनमे एवं इनके द्वारा दिए हुए दूध के पीने से इंसानो में पागलपन एवं अन्य लाइलाज बीमारियों पैदा होती है।

4. नंदी का बधियाकरण करना बंद कराना

नंदी की शक्ति प्रकृति का वरदान है उसे वधिया करके बैल बनाने से नंदी - नंदिनी वंश का श्राप हमारे ऊपर आया है, हमारा सारा खाना एवं दूध श्रापित हुआ है, इस कारण हम गुलाम भी हुए और अब भी गुलामी की तरह ही जी रहे हैं। वधियाकरण बंद करने से, गोवंश के सम्मान करने से हमारे पाप धुलेंगे और हममे खोयी हुयी शक्ति का पुनः संचार होगा।

5. घरों, बैठकों, सेमिनारों, प्रवचनों एवं अन्य सार्वजनिक कार्यक्रमों से दूध, एवं दूध से बानी हुयी चाय, कॉफी को स्वागत पेयके श्रेणी से हटाना

बैठकों, सेमिनारों, प्रवचनों में दूध की चाय-

कॉफी परोसने से डेयरी को बढ़ावा मिलता है, जिससे ज्यादा गोवंश, घांस, चीनी, चाय पत्ती, कॉफी की जरूरत होती है, जिसके लिए ज्यादा जमीन की जरूरत पड़ती है, गोवंश का वध बढ़ता है, समाज में शारीरिक एवं मानसिक विकार बढ़ता है एवं सम्पूर्ण पर्यावरण पर खराब होता है ।

6 . गायों और भैंसों में वर्तमान में व्याप्त कृत्रिम गर्भाधान को बंद कराना,

कृत्रिम गर्भाधान प्रकृति के विरुद्ध है, नंदी और भैंसा को गैरजरूरी बनाना प्रकृति में असन्तुलन पैदा करता है,। यदि यह प्रक्रिया जारी रही तो आने वाले समय में महिलाओं में भी कृत्रिम गर्भाधान कराया जा सकता है पुरुषों को अनावश्यक किया जा सकता है, ऐसा करना प्रलय लाने जैसा होगा।

7 .गायों और भैंसों में इलेक्ट्रॉनिक चिप लगाने की प्रक्रिया को बंद कराना

इलेक्ट्रॉनिक/रेडियो-

एक्टिव चिप से बीमारियां फैलती हैं और उनमें इलेक्ट्रॉनिक चिप के माध्यम से कोई भी गुण - अवगुण, स्वास्थ्य या बीमारियां पैदा की जा सकती है जो प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है , गायों और भैंसों में इलेक्ट्रॉनिक चिप इंसानों में भी चिपिंग की शुरुआत होती है जो वैश्विक विध्वंस लायेगी ।

समायोजन अवधि: 31 दिसंबर 2027 यह डेढ़ वर्ष का समय - हमें (सभी नागरिकों को) इन वास्तविकताओं के अनुकूल होने के लिए समय है।

हमारा संकल्प: । गोवंश की सुरक्षा

धर्म का पुनरुत्थान, दुष्टों का विनाश, सज्जनों/ का उत्थान। धर्म संस्थानों की स्थापना।

English translation of above:

A Movement, a campaign to ensure the protection of Cow clan (Nandi-Nandini: Cows and Bulls)

Goal: To ensure the protection of the Cow clan at both national and international levels by December 31, 2027.

The following are the seven main resolutions of this submission, campaign, movement, and appeal:

1. To stop the consumption of milk, milk-based tea, and coffee by adults.

Milk is a boon of nature intended for infants and for those who cannot digest anything other than milk. This measure will reduce the pressure on the production of milk (from cows and buffaloes), as well as on the production of grass, sugar, tea leaves, coffee beans, and ginger. The land thus freed up can be utilized for planting trees, thereby improving the environment.

2. To ban the use of Oxytocin injections.

Oxytocin, used to facilitate easy milk extraction, renders cows and buffaloes diseased and toxic. Consequently, people who consume such milk or utilize the urine and dung of these animals fall ill. Furthermore, the consumption of the carcasses of such diseased cows and buffaloes has even led to the near-extinction of vultures.

3. To halt the production of 'Non-Vegetarian Milk.'

To put an end to the practice of feeding the cows and buffaloes meat, bones, or blood (blood meal) as fodder. Feeding animals such fodder induces physical and mental deformities in them; subsequently, consuming their milk leads to the onset of madness and other incurable diseases in humans.

4. To halt the castration of Nandi (Bulls).

The virility of Nandi is a divine gift of nature. By castrating them to turn them into oxen, we have incurred a curse upon ourselves—a curse of the entire lineage of Nandi and Nandini, consequently, all our food and milk have become tainted by this curse; this is the reason we

were enslaved in the past, and why we continue to live in a state akin to slavery even today. By putting an end to castration and by treating the bovine species with due respect, our sins shall be absolved, and our lost vitality and strength shall be restored.

5. Removing milk—and tea or coffee prepared with milk—from the category of "welcome beverages" in homes, meetings, seminars, discourses, and other public events.

Serving milk-based tea and coffee at meetings, seminars, and discourses promotes the dairy industry. This, in turn, necessitates a larger population of Cows and Buffaloes, as well as increased quantities of fodder, sugar, tea leaves, and coffee beans—all of which require more land for cultivation. Consequently, the slaughter of cattle increases, cultivated land gets wasted; physical and mental disorders rise within society; and the overall environment suffers degradation.

6. Halting the practice of Artificial Insemination, currently prevalent among cows and buffaloes.

Artificial Insemination runs contrary to the laws of nature. Rendering bulls and male buffaloes obsolete creates an imbalance within the natural order. If this process is allowed to continue, it could eventually lead to the implementation of artificial insemination in humans as well, potentially rendering men unnecessary—an act tantamount to inviting a cataclysm.

7. Halting the process of implanting electronic chips in cows and buffaloes.

Electronic or radio-active chips can spread diseases. Furthermore, through the medium of these electronic chips, specific traits—whether positive or negative—as well as specific health conditions or diseases can be artificially induced in the animals; this violates natural laws. The implantation of electronic chips in cows and buffaloes serves as a precursor to the chipping of humans—a development that would inevitably lead to global destruction.

Adjustment Period: December 31, 2027. This one-and-a-half-year timeframe serves as an opportunity for us (all citizens) to adapt to these new realities.

Our Pledge: The protection of the Cow clan.

The revival of Dharma (righteousness), the eradication of the wicked, the upliftment of the virtuous, and the establishment of Dharma Sansthan (institutions dedicated to Dharma).